**[2023] 11 एस. सी. आर 674:2023 आई. एन. एस. सी. 709**

**मुकदमों का विवरण**

सीवानंदन सी टी और अन्य

बनाम

केरल बनाम का उच्च न्यायालय एवं अन्य

(2017 की रिट याचिका (दीवानी) संख्या 229)

12 जुलाई, 2023

**[डॉ. धनंजय वाई चंद्रचूड़, भारत के मुख्य न्यायाधीश ऋषिकेश रॉय, पामिदिगंथम श्री नरसिम्हा, पंकज मिट्ठल, मनोज मिश्रा, न्यायाधीशगण]**

**हेडनोट्स**

**विचार के लिए विषयः** केरल राज्य उच्च न्यायिक सेवा विशेष नियम 1961 के नियम 2 (सी) (iii) में कहा गया है कि इस श्रेणी के 25 प्रतिशत पदों पर "उच्च न्यायालय द्वारा आयोजित प्रतियोगी परीक्षा और मौखिक परीक्षा में प्राप्त कुल अंकों/ग्रेड के आधार पर" बार से सीधी भर्ती की जाएगी। विशेष रूप से परीक्षा की योजना अनुबंधित में किया गया था कि वाइवा वॉस मौखिक परीक्षा के लिए कोई कट ऑफ अंक नहीं होंगे। क्या उच्च न्यायालय का वाइवा-वॉस परीक्षा के लिए कट-ऑफ निर्धारित करने का निर्णय मनमाना था।

**केरल राज्य उच्च न्यायिक सेवा विशेष नियम 1961-नियम 2 (सी) (iii)-वह योजना जिसे उच्च न्यायालय द्वारा 13.12.2012 को अधिसूचित किया गया था, स्पष्ट रूप से निर्दिष्ट किया गया था कि वाइवा-वॉस के संबंध में कोई कट-ऑफ अंक नहीं होंगे-हालाँकि,**

**वाइवा-वॉस परीक्षा के लिए कट-ऑफ निर्धारित करने का उच्च न्यायालय का निर्णय वाइवा-वॉस परीक्षण आयोजित होने के बहुत बाद लिया गया था।**

**स्वामित्वः** उच्च न्यायालय की प्रशासनिक समिति ने सुनिश्चित करने के लिए कि अपेक्षित व्यक्तित्व वाले उम्मीदवार न्यायिक कार्यालय का भार लें प्रामाणिक कारण से प्रवृत्त होकर मौखिक परीक्षा के वास्ते कट-आफ लगाने का निर्णय लिया इस तरह के परिवर्तन को नियमों में एक ठोस संशोधन द्वारा लाने की आवश्यकता होगी जो बहुत बाद में आया-यह ऐसा मामला नहीं है जहां उच्च न्यायालय के नियम या योजना शांत थे-जहां वैधानिक नियम शांत हैं, एक प्रशसनिक आदेश द्वारा नियमों के उद्देश्य एवं भावना के साथ संगत तरीके से पूर्ण किया जा सकता वर्तमान मामले में, वैधानिक नियमों में स्पष्ट रूप से प्रावधान किया गया है कि चयन सूची लिखित परीक्षा और मौखिक परीक्षा में प्राप्त अंकों के कुल के आधार पर तैयार की जाएगी-इसे परीक्षा की योजना में आगे विस्तार से बताया गया था जिसमें निर्धारित किया गया था कि मौखिक परीक्षा के लिए कोई कट ऑफ अंक नहीं होंगे-इस स्थिति को उच्च न्यायालय की अधिसूचना दिनांक 30.09.2015 में भी प्रतिबिंबित किया गया है-इस पृष्ठभूमि में, उच्च न्यायालय का निर्णय स्पष्ट रूप से मनमाना होने के अलावा 1961 के नियमों के अधिकार से बाहर होने के कारण से ग्रसित था। [पैरा 15 और 16]

**सिद्धांत-वैध अपेक्षा का सिद्धांत-के तहत दावाः**

**अभिनिर्धारित कियाः** एक व्यक्ति जो वैध अपेक्षा के सिद्धांत के आधार पर लाभ या पात्रता का दावा करता है, उसे स्थापित करना होगाः((i) अपेक्षा की वैधता; और (ii) वैध अपेक्षा से इनकार करने से अनुच्छेद 14 का उल्लंघन हुआ। [पैरा 44]

**सिद्धांत-वैध अपेक्षा का सिद्धांत-क्या उच्च न्यायालय का निर्णय याचिकाकर्ताओं की वैध अपेक्षा को विफल करता हैः**

**अभिनिर्धारित कियाः** 1961 के नियमों के नियम 2 (सी) (iii) में भौतिक समय पर यह प्रावधान किया गया था कि लिखित परीक्षा में प्राप्त कुल अंकों/ग्रेड और उच्च न्यायालय द्वारा आयोजित वाइवा-वॉस के आधार पर जिला और सत्र न्यायाधीशों के 25 प्रतिशत पदों पर बार से सीधी भर्ती की जानी चाहिए-विशेष रूप से निर्धारित परीक्षा की योजना में कहा गया है कि वाइवा वॉस के लिए कोई कट ऑफ अंक नहीं होंगे-याचिकाकर्ताओं को परीक्षा की योजना में व्यक्त शर्त को देखते हुए वाइवा वॉस के लिए कोई न्यूनतम कट-ऑफ की उम्मीद नहीं होगी-याचिकाकर्ताओं की उपरोक्त दोनों अपेक्षाएं वैध हैं क्योंकि वे वैधानिक नियमों, परीक्षा की योजना की मंजूरी पर आधारित हैं- चयनित उम्मीदवार का मेधा सूची अपेक्षित क्रम से अलग हटकर तैयार करने का प्रशासनिक समीति का निर्णय 1961 के असंशोधित नियमों के विपरीत है-वर्तमान मामले में, मौखिक परीक्षा के संचालन के उपरान्त, मौखिक परीक्षा में न्यूनतम कट-ऑफ अंक की अनिवार्यता प्रारंभ की गई-उच्च न्यायालय का मौखिक पीरक्षा के वास्ते न्यूनतम कट-ऑफ का प्रयोग करने का निर्णय, याचिकाकर्ताओ के अपेक्षित वैधनिक यथेष्टता को विफल कर देता है-चूंकि, उच्च न्यायालय का निर्णय वैधानिक तौर पर अतर्कसंगत है एवं निष्पक्षता, निरंतरता एवं संभावता की कसौटी पर विफल है, ऐसे कार्यवाही का क्रम मनमाना एवं अनुच्छेद 14 का उल्लंधनकारी होगा। [कंडिकाएँ 46,47, 51 एवं 52].

**सिद्धांत अच्छे प्रशासन का सिद्धांतः**

**अभिनिर्धारित कियाः** अच्छे प्रशासन के सिद्धांतों के लिए आवश्यक है कि सार्वजनिक प्राधिकरणों के निर्णयों को निरंतरता, पारदर्शिता और पूर्वानुमेयता की कसौटी का सामना करना चाहिए ताकि मनमाना एवं अनुच्छेद 14 का उल्लंघनकारी कहे जाने से बचा जा सके। [कंडिका 55]

**सिद्धांत-वैध अपेक्षा का सिद्धांत-इनके अनुप्रयोग में सीमाः**

**अभिनिर्धारित कियाः** एक सार्वजनिक प्राधिकरण को अदालत के समक्ष प्रासंगिक सामग्री प्रस्तुत करके निष्पक्ष रूप से प्रदर्शित करना चाहिए कि उसका निर्णय वैध अपेक्षा के दावे को विफल करने के लिए सार्वजनिक हित में था। [पैरा 55]

**निर्देश-मौखिक परीक्षा के लिए न्यूनतम कटौती लागू करने के उच्च न्यायालय के फैसले ने याचिकाकर्ताओं की मूल वैध अपेक्षा को निराश कर दिया-उच्च न्यायालय का निर्णय कानूनी रूप से अतर्कसंगत है-क्या याचिकाकर्ताओं को उच्च न्यायिक सेवा में शामिल किया जा सकता हैः**

**अभिनिर्धारित कियाः** राहत की बात करें तो छह साल से अधिक समय बीत जाने के बाद याचिकाकर्ताओं को उच्च न्यायिक सेवा में शामिल करने का निर्देश देना जनहित के विपरीत होगा-लगभग छह साल पहले चुने गए उम्मीदवारों को अयोग्य नहीं ठहराया जा सकता है-वे सभी योग्य थे और राज्य की जिला न्यायपालिका की सेवा कर रहे थे-इस स्तर पर उन्हें पद से हटाना जनहित के विपरीत होगा-याचिकाकर्ताओं को शामिल करना, उन लोगों जो लंबी अवधि से न्यायिक कार्यालय में हैं, की तुलना में नए उम्मीदवारों को प्राथमिकता देना होगा राज्य और उसके नागरिकों को इन अनुभवी न्यायिक अधिकारियों जो वरिष्ठ पद पर है के लाभ से वंचित करना जनहित में नहीं होगा। [पैरा 55]

**<u>उद्धरणों एवं अन्य संदर्भों की सूची</u>**

*सचिव, कर्नाटक राज्य बनाम उमादेवी (2006) 4 एससीसी 1:[2006] 3 एस. सी. आर. 953-अनुसरण किया गया।*

*भारतीय खाद्य निगम बनाम कामधेनू पशु आहार उद्योग (1993) 1 एससीसी 71: [1992] 2 पूरक एस. सी. आर. 322; भारत संघ बनाम हिन्दुस्तान विकास निगम (1993) 3 एस. सी. सी. 499:[1993] 3 एस. सी. आर. 128; पंजाब कम्युनिकेशन लिमिटेड बनाम*

*भारत संघ (1999) 4 एस. सी. सी. 727:[1999] 2 एससीआर 1033; राम प्रवेश सिंह बनाम बिहार राज्य (2006) 8 एससीसी 381:[2006] 6 पूरक एससीआर 512 झारखंड राज्य बनाम ब्रह्मपुत्र धातु 2020 एस. सी. सी. ऑनलाइन एस. सी. 968; एस.ई.बी.आई. बनाम सुनील कृष्ण खेतान (2023) 2 एस. सी. सी. 643-पर भरोसा किया।*

*शिवानंदन सी. टी बनाम केरल उच्च न्यायालय (2018) 1 एस. सी. सी. 239:[2017] 13 एससीआर 226; तेज प्रकाश पाठक और अन्य बनाम राजस्थान उच्च न्यायालय और अन्य (2013) 4 एससीसी 540; के. मंजुश्री बनाम आंध्र प्रदेश राज्य और एक अन्य (2008) 3 एससीसी 512:[2008] 2 एस. सी. आर. 1025; हरियाणा राज्य बनाम सुभाष चंद्र मारवाह (1974) 3 एस. सी. सी. 220:[1974] 1 एससीआर 165; बिहार राज्य बनाम बाल मुकुंद साह (2000) 4 एससीसी 640:[2000] 2 एस. सी. आर. 299; एम. पी. तेल निष्कर्षण बनाम एम. पी. राज्य (1997) 7 एस. सी. सी. 592:[1997] 1 पूरक। एससीआर 671; राष्ट्रीय भवन निर्माण निगम बनाम एस. रघुनाथन (1998) 7 एससीसी 66:[1998] 1 पूरक। एस. सी. आर. 156; बन्नारी अम्मान शुगर लिमिटेड बनाम सी. टी. ओ. (2005) 1 एस. सी. सी. 625:[2004] 6 पूरक। एस. सी. आर. 264; सेठी ऑटो सर्विस स्टेशन बनाम डी. डी. ए. (2009) 1 एस. सी. सी. 180:[2008] 14 एस. सी. आर. 598; मोनेट इस्पात एंड एनर्जी लिमिटेड बनाम (2012) 11 एससीसी 1:[2012] 7 एस. सी. आर. 644 पी. सुशीला बनाम विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (2015) 8 एस. सी. सी. 129:[2015] 5 एस. सी. आर. 643; केरल राज्य पेय पदार्थ (एम. एंड एम.) निगम लिमिटेड बनाम.पी पी सुरेश (2019) 9 एससीसी 710:[2019] 17 एससीआर 164; झारखंड राज्य बनाम ब्रह्मपुत्र धातु 2020 एस. सी. सी. ऑनलाइन एस. सी. 968; भारत संघ बनाम हिंदुस्तान विकास निगम (1993) 3 एस. सी. सी. 499:[1993] 3 एस. सी. आर. 128; बिहार राज्य बनाम श्यामा नंदन मिश्रा, 2022 एस. सी. सी. ऑनलाइन एस. सी. 554; नोएडा उद्यमी संघ बनाम नोएडा (2011) 6 एस. सी. सी. 508:[2011] 8 एस. सी. आर. 25; बिहार राज्य बनाम श्यामा नंदन मिश्रा*

*2022 एस. सी. सी. ऑनलाइन एस. सी. 554; एस. जी. जयसिंहानी बनाम भारत संघ 1967 एस. सी. सी. ऑनलाइन एस. सी. 6; बन्नारी अम्मान शुगर लिमिटेड बनाम सीटीओ (2005) 1 एससीसी 625:[2004] 6 पूरक एससीआर 264; भारत संघ बनाम लेफ्टिनेंट कर्नल पी. के. चौधरी (2016) 4 एससीसी 236:[2016] 2 एस. सी. आर. 426; झारखंड राज्य बनाम ब्रह्मपुत्र धातु 2020 एस. सी. सी. ऑनलाइन एस. सी. 968-संदर्भित।*

*सलेमी बनाम मैकेलर [1977] एच. सी. ए. 26; श्मिट बनाम गृह मामले के वास्ते राज्य सचिव [1969] 2 डब्ल्यूएलआर 337; ओ 'रेली बनाम मैकमैन [1983] 2 एसी 237; हांगकांग के महान्यायवादी बनाम एनजी युएन शिउ [1983] 2 डब्ल्यूएलआर 735; सिविल सेवा संघ परिषद बनाम सिविल सेवा मंत्री [1985] एसी 374; आर बनाम उत्तर और पूर्वी डेवोन स्वास्थ्य प्राधिकरण, एक पक्षीय कफलान [2001] क्यूबी 213; नादराजा बनाम गृह विभाग के लिए राज्य सचिव [2005] ईडब्ल्यूसीए सिविल 1363; आर बनाम शिक्षा और रोजगार विभाग [2000] 1 डब्ल्यूएलआर 1115; पापोनेट बनाम त्रिनिदाद और टोबैगो के महान्यायवादी [2012] 1 एसी 1; रेजिना (बीबी) बनाम न्यूहैम लंदन नगर काउंसिल [2002] 1 डब्ल्यूएलआर 237 - संदर्भित किया गया।*

**<u>अन्य मामलों के विवरणों में आक्षेपित आदेश और पेशी शामिल हैं</u>**

दीवानी मूल क्षेत्राधिकारः 2017 की रिट याचिका (दीवानी) सं. 229.

(भारत के संविधान के अनुच्छेद 32 के तहत)

साथ में

2017 की रिट याचिका (दीवानी) संख्या 379,618 और 232।

**पेशी:**

राणा मुखर्जी, निरंजन रेड्डी, बनाम चितमबरेश, रामेश्वर सिंह मलिक, वरिष्ठ अधिवक्ता, डॉ. रितु भारद्वाज, मोहन कुमार, सुश्री नीतू सिंह, सुश्री आसिया बेग, विवेक नारायण शर्मा, श्रीमती महिमा भारद्वाज कलुचा, दिनेश शर्मा, अजय सिंह, सुश्री लक्ष भवनानी, अधिराज वढेरा, रोहित शर्मा, देवेंद्र सिंह, चेतन गर्ग, विश्वजीत प्रसाद अजय विक्रम सिंह, श्रीमती प्रियंका सिंह, श्रीमती गरिमा सिंह, शुभम सिंह, ओमकार, पंकज कुमार, श्रीमती बी. सुनीता राव, रंजीत कुमार, गुनमाया एस. मान, एस. पोपली, अनंत कुमार, बिपिन कुमार, सुश्री जया किरण, सुश्री ज्योति सिंह, उदय प्रकाश, राजीव मेहता, अहंतेम हेनरी, अहंतेम रोहेन सिंह, विवेक कुमार। मोहेन सिंह, सुश्री प्रियंका, पी.भी. दिनेश, सुश्री ओमेन अन्ना ए, सुश्री उवर्शी चौहान, श्रीमती हरप्रिया पद्मनाभन, कुरियाकोसे वर्गीज, भी.श्याममोहन, श्रुतांजया भारद्वाज, सुश्री ईशा घई, अक्षत गोगना मेसर्स के एम एन पी कानून के वास्ते, श्रीराम पाराक्कार, एम.एस. विष्णु शंकर, कोशी जान, श्रीनाथ एस, सुश्री अधिरा जी नायर, सुश्री रिष्य ज्योति सिंह, आदित्य संतोष मेससर्स लॉफिक के वासते, लक्ष्मीश एस. कामथ, सुश्री समृति आहुजा, श्रीमती साक्षी बंगा, श्रीमती चित्रा परांदे, कौस्तुम शुक्ला, सुश्री नैन्सी शमीम, सी. गोविंद वेणुगोपाल, प्रकाश रंजन नायक, अशोाक पाणिग्राही, संजीव कुमार, नायक सच. के अजम अमृतराज, विवेक कुमार, निकिलेश रामचन्द्रन, राधेनद्र बसंत, सुश्री लिज मैथ्यू, सुश्री मल्लिका अग्रवाल, जितेश मलिक, अभय नाथ दास, योगेन्द्र कुमार वर्मा, सतीश कुमार, सुश्री श्रद्धा देशमुख, निखिल सिंहवी, बिलला इकराम, उत्कर्ष कोमथा त्रषभ संचेली, सुश्री पद्म प्रिया, अंचित भंडारी, सुयश जैन, चिराग कलानी के. पारी याचिकाकर्तागण के वास्ते अधिवक्तागण

के. एम. नटराज, ए.एस.जी., दामा शेषाद्री नायडू, विजय हंसारिया, डॉ. के. पी. कैलासनाथ पिल्लै, वरिष्ठ अधिवक्ता। , टी. जी. नारायणन नायर, रमेश बाबू एम. आर., सुश्री शिवाली शेषाद्री नायडू, सुश्री शिवाली चौधरी, पवनश्री अग्रवाल, सुनील कुमार जैन, सुश्री राशिका स्वरूप, गौरव अग्रवाल, पी. आई. जोस, जेम्स पी. थॉमस, रवि सागर, निखिल

गोयल, सुश्री नवीन गोयल, कार्तिक कौशल, आदित्य कोशी रॉय, सुश्री सीधी गुप्ता, मैबम नबघनश्यम सिंह, महेश ठाकुर, शक्ति के पट्टनायक, सुश्री दीक्षा राय, सुश्री रागिनी पांडे, रामेश्वर प्रसाद गोयल, मनीष गोस्वामी, सी. एम. अंगड़ी, सुश्री दीपानविता प्रियंका, निशे राजन शोंकर, श्रीमती अनु के.अब्राहम सी मैथ्यू, आलिम अनवर, देबोजीत बोरकाकारी, प्रशान्त पद्मनाभन, पी. ए. नूर मुहामेद, सन्नी मारकोस, मोहामाद शरीफ के. पी, रीमती जिफरा एस., ए. नोफल, ए. शुकूर, शेरीफ सुश्री रश्मि सिंघानिया, रंजीथ के. सी. सुश्री निवेदिया आर. मेनन, आदित्य वर्मा ललित कुमार, अनिल कुमार, रणबीर सिंह यादव, सुश्री अंजु के वार्के पी. राकेश पनिकर, सुश्री महेश शर्मा, एम. गिरीश कुमार, अंकुर एस. कुलकर्णी, अधिवक्तागण उत्तरदाताओं के लिए।

**सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय/आदेश**

**निर्णय**

**डॉ. धनंजय वाई चंद्रचूड़ भारत के मुख्य न्यायाधीश**

**विषय सूची**

**ए. पृष्ठभूमि ..... 3**

**बी. प्रस्तुतियाँ ..... 7**

**सी. विश्लेषण ..... 9**

i. उच्च न्यायालय का निर्णय 1961 नियमों

के अधिकार के बाहर था ..... 9

ii. वैध अपेक्षा ..... 12

ए. सामान्य कानून के तहत वैध अपेक्षा का सिद्धांत .....13

बी. भारतीय कानून के तहत वैध अपेक्षा का सिद्धांत ..... 16

सी. पर्याप्त वैध अपेक्षा ..... 18

डी. गैर-मनमानी पहलुओ के रुप में सुसंगति

एवं पूर्वानुमेयतर ..... 26

**घ. वैध अपेक्षा के सिद्धांत का अनुप्रयोग** ..... 29

i. उच्च न्यायालय ने खुद को किस बात के लिए

प्रतिबद्ध किया है? ..... 30

ii. क्या उच्च न्यायालय ने अपनी प्रतिबद्धता

के संबंध में गैरकानूनी तरीके से काम किया है? ..... 31

iii. इस अदालत को क्या करना चाहिए? ..... 34

**ई. निष्कर्ष ..... 35**

**ए. पृष्ठभूमि**

1. 14 नवंबर 2017 को इस न्यायालय के दो न्यायाधीशों की पीठ ने संविधान के अनुच्छेद 32 के तहत इस न्यायालय के अधिकार क्षेत्र को लागू करने वाली चार **शिवानंदन सी.टी. बनाम केरल उच्च न्यायालय** के याचिकाओं के एक समूह को संविधान पीठ के पास भेजा। इस न्यायालय के समक्ष ग्यारह याचिकाकर्ता हैं जिनमें से सभी केरल राज्य की उच्च न्यायिक सेवा में जिला न्यायाधीशों के रूप में चुने जाने के इच्छुक उम्मीदवार हैं।

2. केरल राज्य में, केरल राज्य उच्च न्यायिक सेवा विशेष नियम 1961 11 जुलाई 1961 को लागू हुआ। ये नियम संविधान के अनुच्छेद 233 और 309 के तहत बनाए गए हैं। 1961 के नियम उच्च न्यायिक सेवा के गठन के लिए तीन श्रेणियों का प्रावधान करते हैंः

(i) सुपर-टाइम स्केल जिला और सत्र न्यायाधीश;

(ii) चयन ग्रेड जिला और सत्र न्यायाधीश; और

(iii) अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश सहित अतिरिक्त जिला और सत्र न्यायाधीश।

3. वर्तमान मामलों के समूह में विवाद ऊपर उल्लिखित तीसरी श्रेणी से संबंधित है। नियम 2 (सी) तीसरी श्रेणी की नियुक्ति की विधि प्रदान करता है। नियम 2 (सी) (iii) में कहा गया है कि इस श्रेणी के 25 प्रतिशत पदों पर "उच्च न्यायालय द्वारा आयोजित प्रतियोगी परीक्षा और मौखिक परीक्षा में प्राप्त कुल अंकों/ग्रेड के आधार पर" बार से सीधी भर्ती की जाएगी।

4. 13 दिसंबर 2012 की एक अधिसूचना द्वारा, केरल उच्च न्यायालय ने केरल उच्च न्यायिक सेवा परीक्षा के लिए योजना निर्धारित की। उच्च न्यायालय द्वारा अधिसूचित योजना में परीक्षा से संबंधित निम्नलिखित शर्तें थींः

(i) परीक्षा में एक लिखित परीक्षा शामिल होगी जिसमें 150 अंकों के दो पेपर होंगे और कुल 350 अंकों के साथ 50 अंकों का एक मौखिक परीक्षा होगी;

(ii) जबकि प्रत्येक पेपर के लिए अलग-अलग न्यूनतम अंक निर्धारित नहीं किए गए थे, सामान्य श्रेणी के उम्मीदवार जो कुल मिलाकर कम से कम 50 प्रतिशत अंक प्राप्त करते हैं और अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के

उम्मीदवार जो दोनों पेपरों के लिए कुल मिलाकर कम से कम 40 प्रतिशत अंक प्राप्त करते हैं, वे मौखिक परीक्षा के लिए योग्य होंगे।

(iii) वाइवा-वॉयस टेस्ट प्रत्येक उम्मीदवार के लिए 25 से 30 मिनट के बीच की अवधि के लिए "पूरी तरह से और वैज्ञानिक तरीके से" आयोजित किया जाएगा।

(iv) वाइवा-वॉयस के लिए कोई कट ऑफ अंक नहीं होंगे; और

(v) योग्यता सूची लिखित परीक्षा और मौखिक परीक्षा दोनों में प्राप्त कुल अंकों के आधार पर तैयार की जाएगी।

5. 30 सितंबर 2015 को केरल उच्च न्यायालय द्वारा एक अधिसूचना जारी की गई थी जिसके द्वारा बार से सीधी भर्ती द्वारा केरल राज्य उच्च न्यायिक सेवाओं में जिला और सत्र न्यायाधीशों के रूप में नियुक्ति के लिए योग्य उम्मीदवारों से आवेदन आमंत्रित किए गए थे। अधिसूचना के पैराग्राफ 5 में चयन के तरीके का प्रावधान है। पैराग्राफ 5 में कहा गया है कि चयन एक प्रतियोगी परीक्षा के आधार पर होगा जिसमें एक लिखित परीक्षा और एक मौखिक परीक्षा शामिल होगी। लिखित परीक्षा के लिए निर्धारित कुल अंक 300 थे, जिसमें दो पेपर थे, जिनमें से प्रत्येक में अधिकतम 150 अंक थे। सामान्य उम्मीदवार और ओ. बी. सी. श्रेणी से संबंधित उम्मीदवार जो 50 प्रतिशत अंक प्राप्त करते हैं और एससी/एसटी उम्मीदवार जो दोनों लिखित पत्रों के लिए कुल न्यूनतम 40 प्रतिशत अंक प्राप्त करते हैं, उन्हें वाइवा-वॉस के लिए योग्य घोषित किया जाना था। वाइवा-वॉयस के लिए निर्धारित अधिकतम अंक पचास थे। पैराग्राफ 5 में कहा गया है कि "सफल उम्मीदवारों की योग्यता सूची लिखित परीक्षा और मौखिक परीक्षा में प्राप्त कुल अंकों के आधार पर तैयार की जाएगी। .

6. 30 सितंबर 2015 को उच्च न्यायालय द्वारा जारी अधिसूचना के बाद, लिखित परीक्षा 12 और 13 मार्च 2016 को आयोजित की गई थी। 17 दिसंबर 2016 को लिखित परीक्षा में उत्तीर्ण होने वाले उम्मीदवारों के बारे में अधिसूचना प्रकाशित की गई। इसके बाद, 16 जनवरी से 24 जनवरी 2017 के बीच, सभी योग्य उम्मीदवारों के लिए वाइवा-वॉयस आयोजित किया गया था।

7. 27 फरवरी 2017 को, वाइवा-वॉस आयोजित किए जाने के बाद, उच्च न्यायालय की प्रशासनिक समिति ने एक प्रस्ताव पारित किया जिसके द्वारा उसने वही न्यूनतम कट-ऑफ अंक लागू करने का निर्णय लिया जो वाइवा-वॉस में योग्यता मानदंड के रूप में लिखित परीक्षा के लिए निर्धारित किए गए थे। इस निष्कर्ष पर पहुंचने में, प्रशासनिक समिति का विचार था कि चूंकि उच्च न्यायिक सेवा में नियुक्तियां की जा रही थीं, इसलिए आवश्यक व्यक्तित्व और ज्ञान वाले उम्मीदवारों का चयन करना आवश्यक था, जिसे लिखित परीक्षा के लिए निर्धारित कट-ऑफ के समान वाइवा-वॉस के लिए कट-ऑफ निर्धारित करके सुनिश्चित किया जा सकता था। 6 मार्च 2017 को केरल उच्च न्यायालय के पूर्ण न्यायालय ने प्रशासनिक समिति के प्रस्ताव को मंजूरी दी। उसी दिन सफल उम्मीदवारों की अंतिम योग्यता सूची भी प्रकाशित की गई थी।

8. वाइवा वॉस के लिए न्यूनतम कट-ऑफ अंक लागू करने के पूर्ण न्यायालय के निर्णय और इसके परिणामस्वरूप सफल उम्मीदवारों की सूची की घोषणा के कारण संविधान के अनुच्छेद 32 के तहत इस न्यायालय के समक्ष याचिकाएं दायर की गईं। जो उम्मीदवार इस न्यायालय के समक्ष हैं, वे इस तथ्य से व्यथित हैं कि मौखिक परीक्षा में कट ऑफ अंकों के आवेदन के परिणामस्वरूप, उन्हें चयन से बाहर कर दिया गया है, हालांकि वे लिखित परीक्षा और मौखिक परीक्षा में कुल अंकों को ध्यान में रखते हुए चुने गए कई उम्मीदवारों की तुलना में अधिक रैंक प्राप्त करेंगे। यह विशिष्ट शिकायत इस न्यायालय के समक्ष तब

की गई थी जब विशेष रूप से तीन उत्तरदाताओं, 9,11 और 12 के संबंध में नोटिस जारी किया गया था।

9. जब 14 नवंबर 2017 को इस न्यायालय की दो-न्यायाधीशों की पीठ द्वारा याचिका पर सुनवाई की गई, तो **तेज प्रकाश पाठक बनाम राजस्थान उच्च न्यायालय** में बड़ी पीठ को पहले दिए गए संदर्भ के बाद संविधान पीठ को एक संदर्भ दिया गया था। पहले के निर्णय में संविधान पीठ का संदर्भ देते हुए, मुख्य मुद्दा जिस पर यह ध्यान दिया जाता है वह यह है कि क्या चयन प्रक्रिया शुरू होने के बाद खेल के बीच के नियमों को बदलने के लिए यह कानून में खुला है। उस संदर्भ में, निर्भरता **के. मंजुश्री बनाम आंध्र प्रदेश राज्य** में पहले के निर्णय पर रखा गया। 14.06.1997 निपटान-औसत से बहुत बेहतर। ईमानदारी-संदिग्ध, जैसा कि कॉलम नं. 5 (स्तम्भ संख्या 5 में निम्नलिखित उल्लेख किया गया हैः- प्रतिष्ठा-अच्छी नहीं है। सत्यनिष्ठा-बोर्ड से ऊपर नहीं उनके अनियमित आदेशों के बारे में उदाहरण--(1) जी.आर. केस नं. 601/95 में दिनांक 17.10.95 द्वारा आदेश पारित किया गया। जिसमें उन्होंने आरोपी को आई.पी.सी. की धारा 302 के तहत जमानत दे दी थी, जिसमें पहले ही दिन केस डायरी को देखे बिना खुलआम कार्रवाई करने का आरोप लगाया गया था, जिसके खिलाफ अपराधिक विविध 50/95 जमानत रद्द करने के लिए दायर किया गया था और उन्हें मेरे द्वारा भविष्य में सावधान रहने का निर्देश दिया गया था। उनके खिलाफ ऐसे कई आरोप मिले थे।) के. मंजुश्री (ऊपर) के विचार पर इस आधार पर संदेह किया गया है कि उस मामले में जो सिद्धांत निर्धारित किया गया है, वह **हरियाणा राज्य बनाम सुभाष चंदर माखह** में पहले के निर्णय के विपरीत चलता प्रतीत होगा। इस दृष्टिकोण से कि हम वर्तमान मामले में लेने के लिए इच्छुक हैं, व्यापक संवैधानिक मुद्दे पर शासन करना आवश्यक नहीं है जिस पर **तेज प्रकाश पाठक** (ऊपर) में एक संदर्भ दिया गया है। हम इस निष्कर्ष पर क्यों पहुंचे हैं, इसके बारे में जल्द ही विस्तार से बताया जाएगा।

**बी. प्रस्तुतियाँ**

10. सुनवाई के दौरान, हमने याचिकाकर्ताओं की ओर से श्री वी. चितंबरेश, वरिष्ठ वकील, श्री पी. वी. दिनेश, सुश्री हरिप्रिया पद्मनाभन, श्री राघेन बसंत और श्री कुरियाकोस वर्गीज, वकील द्वारा दलीलें सुनी हैं। मुख्य रूप से, उम्मीदवारों के चयन के लिए केरल उच्च न्यायालय द्वारा जिन तौर-तरीकों का पालन किया गया है, उन पर चार आधारों पर हमला किया गया हैः

(i) वाइवा-वॉयस के लिए एक कट ऑफ निर्दिष्ट करते हुए, उच्च न्यायालय ने 1961 के नियमों के नियम 2 (सी) (iii) के विपरीत तरीके से कार्य किया है;

(ii) 13 दिसंबर 2012 को उच्च न्यायालय द्वारा अधिसूचित योजना में स्पष्ट रूप से प्रावधान किया गया था कि वाइवा-वॉस के उद्देश्यों के लिए कोई कटौती नहीं होगी।

(iii) अधिसूचना के अनुसार, उम्मीदवारों को शॉर्टलिस्ट करने के उद्देश्य के लिए एकमात्र मानदंड बार में उम्मीदवारों द्वारा प्रदान किए गए अभ्यास की अवधि होगी जो ऐसी स्थिति में काम करने के लिए थी जहां उम्मीदवारों की संख्या असामान्य रूप से बड़ी पाई गई थी; और

(iv) वाइवा-वॉस के लिए एक कट ऑफ निर्धारित करने के लिए पूर्ण न्यायालय का निर्णय वाइवा-वॉस आयोजित होने के बहुत बाद अधिसूचित किया गया था, जिसके परिणामस्वरूप, उम्मीदवारों को कोई सूचना नहीं थी कि प्रक्रिया की शुरुआत में ऐसी आवश्यकता शुरू की जाएगी।

11. केरल उच्च न्यायालय की ओर से वरिष्ठ वकील श्री दमा शेषाद्री नायडू पेश हुए, जबकि प्रतिवादी संख्या 11 के वरिष्ठ वकील श्री के. पी. कैलासनाथ पिल्लै ने निम्नलिखित आधारों के आधार पर रिट याचिकाओं को खारिज करने के समर्थन में तर्क दियाः

(i) संविधान का अनुच्छेद 233 न्यायिक अधिकारियों के चयन के मामलों में उच्च न्यायालय के पास एक विवेकाधीन शक्ति निहित करता है जिसे वैधानिक नियमों द्वारा कम नहीं किया जा सकता है।

(ii) उच्च न्यायालय द्वारा गठित चयन समिति एक विशेषज्ञ निकाय है जो उम्मीदवारों की उपयुक्तता, न्यायिक संस्थान की जरूरतों और व्यापक सार्वजनिक हित को समझने के लिए सबसे अच्छी स्थिति में है।

(iii) वाइवा वॉस के लिए न्यूनतम कट-ऑफ अंक निर्दिष्ट करने में उच्च न्यायालय का निर्णय उपयुक्त उम्मीदवारों का चयन करने के लिए पूरे बोर्ड में लागू किया गया था और यह मनमानेपन से ग्रसित नहीं है; और

(iv) चूंकि वाइवा वॉस उम्मीदवारों की उपयुक्तता निर्धारित करने के लिए एक आवश्यक घटक है, इसलिए इसे निर्धारित करने के लिए वेटेज निर्धारित करना उच्च न्यायालय के विवेक के भीतर है।

**सी. विश्लेषण**

i. <u>उच्च न्यायालय का निर्णय 1961 के नियम के विपरीत था।</u>

12. 1961 के नियमों में निर्दिष्ट किया गया है कि बार से सीधी भर्ती द्वारा चुने जाने वाले कुल पदों में से 25 प्रतिशत पदों में लिखित परीक्षा और मौखिक परीक्षा में प्राप्त कुल अंकों के आधार पर चुने गए उम्मीदवारों की सूची शामिल होगी। ये नियम, जैसा कि पहले ही उल्लेख किया जा चुका है, संविधान के अनुच्छेद 233 और 309 द्वारा प्रदत्त

शक्तियों का प्रयोग करते हुए बनाए गए हैं। 11 जुलाई 1961 को वैधानिक नियमों को अधिसूचित किए जाने के बाद, केरल उच्च न्यायालय ने 13 दिसंबर 2012 को केरल उच्च न्यायिक सेवा में बार के सदस्यों की भर्ती के लिए परीक्षा की योजना प्रकाशित की। इस तरह की अधिसूचित योजना विशेष रूप से प्रदान करती है कि वाइवा वॉस के लिए कोई कट ऑफ अंक नहीं होंगे। आगामी परीक्षा के संचालन के लिए उच्च न्यायालय द्वारा 30 सितंबर 2015 को जारी अधिसूचना में यह प्रावधान किया गया था कि चयन के तरीके में दो लिखित प्रश्नपत्र शामिल होंगे, जिनमें से प्रत्येक में 150 अंक होंगे और सामान्य और अन्य पिछड़ा जाति श्रेणियों के उम्मीदवार जिन्होंने न्यूनतम 50 प्रतिशत अंक प्राप्त किए हैं अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के उम्मीदवारों के वास्ते 40 प्रतिशत छूट दी गई है। वाइवा-वॉयस के लिए अर्हता प्राप्त करेंगे। अधिसूचना में कहा गया है कि लिखित परीक्षा और वाइवा-वॉस में अंकों का योग योग्यता सूची आरेखण का आधार बनेगा।

13. उपरोक्त पृष्ठभूमि में, यह स्पष्ट है कि जब चयन की प्रक्रिया शुरू हुई, तो सभी उम्मीदवारों को इस तथ्य के बारे में सूचित किया गया था किः(i) मेघा सूची लिखित परीक्षा और वाइवा-वॉयस में प्राप्त कुल अंकों के आधार पर तैयार की जाएगी; (ii) जिन उम्मीदवारों के अंक लिखित परीक्षा में कम से कम निर्धारित न्यूनतम थे, वे वाइवा-वॉयस के लिए अर्हता प्राप्त करेंगे; और (iii) कुल मिलाकर मेरिट सूची तैयार करते समय वाइवा-वॉयस में प्राप्त होने वाले अंकों के संबंध में कोई कट ऑफ लागू नहीं थी।

14. 16 और 24 जनवरी 2017 के बीच वाइवा-वॉस आयोजित किए जाने के बाद 27 फरवरी 2017 को प्रशासनिक समिति द्वारा वाइवा-वॉस परीक्षा के लिए कट-ऑफ निर्धारित करने के वास्ते उच्च न्यायालय का निर्णय लिया गया था। उच्च न्यायालय द्वारा अपनाई गई प्रक्रिया कई दुर्बलताओं से ग्रसित है। सबसे पहले, उच्च न्यायालय का निर्णय नियम 2 (सी) (iii) के विपरीत था जिसमें कहा गया था कि योग्यता सूची लिखित परीक्षा और मौखिक

परीक्षा में कुल प्राप्त अंकों के आधार पर तैयार की जाएगी; दूसरा, 13 दिसंबर 2012 को उच्च न्यायालय द्वारा अधिसूचना में स्पष्ट रूप से निर्दिष्ट किया गया था कि मौखिक परीक्षा के संबंध में कोई कट ऑफ अंक नहीं होंगे; तीसरा, 30 सितंबर 2015 को उच्च न्यायालय की अधिसूचना में स्पष्ट किया गया था कि शर्टलिस्ट(चयन) की प्रक्रिया जो की जाएगी, वह केवल बार के सदस्यों के अभ्यास की अवधि के आधार पर होगी, अगर उम्मीदवारों की संख्या अनुचित रूप से बड़ी होगी; और चौथा

15. 2017 के जनवारी माह में मौखिक लेने के काफी बाद मौखिक परीक्षा वास्ते कट-ऑफ अंक निर्धारित का निर्णय लिया गया। उपरोक्त कारणों से, हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि **तेज प्रकाश पाठक** (उपरोक्त) में संदर्भित व्यापक संवैधानिक मुद्दा वर्तमान मामले के तथ्यों पर निर्णय के योग्य नहीं होगा। स्पष्ट रूप से, उच्च न्यायालय द्वारा लिया गया निर्णय जैसा कि यह है, नियम 2 (सी) (iii) के अधिकार से बाहर था। वास्तव में, सुनवाई के दौरान हमें इस तथ्य से अवगत कराया गया है कि बाद में 2017 में नियमों में संशोधन किया गया है ताकि मौखिक परीक्षा में 35 प्रतिशत अंकों की कटौती निर्धारित की जा सके जो कि 30 सितंबर 2015 को चयन की वर्तमान प्रक्रिया शुरू होने के समय प्रचलित कानूनी स्थिति नहीं थी। उच्च न्यायालय की प्रशासनिक समिति ने यह सुनिश्चित करने के लिए प्रामाणिक कारण से सक्रिय वाइवा-वॉयस परीक्षा के लिए एक कट ऑफ लागू करने का निर्णय लिया कि आवश्यक व्यक्तित्व वाले उम्मीदवार न्यायिक कार्यालय को ग्रहण करें। प्रशासनिक समिति का दृष्टिकोण चाहे कितना भी प्रशंसनीय रहा हो, इस तरह के परिवर्तन को नियमों में एक ठोस संशोधन द्वारा लाने की आवश्यकता होगी जो बहुत बाद में आया जैसा कि ऊपर देखा गया है। यह ऐसा मामला नहीं है जिसमें उच्च न्यायालय के नियम या योजना चुप रहे। जहां वैधानिक नियम मौन हैं, उन्हें एक प्रशासनिक आदेश द्वारा नियमों के उद्देश्य और भावना के अनुरूप तरीके से पूरक किया जा सकता है।

16. वर्तमान मामले में, वैधानिक नियमों में स्पष्ट रूप से प्रावधान किया गया है कि चयन सूची लिखित परीक्षा और मौखिक परीक्षा में प्राप्त अंकों के योग के आधार पर तैयार की जाएगी। इसे परीक्षा की योजना में और विस्तार से बताया गया था जिसमें निर्धारित किया गया था कि वाइवा-वॉयस के लिए कोई कट ऑफ अंक नहीं होंगे। इस स्थिति को 30 सितंबर 2015 की उच्च न्यायालय की अधिसूचना में भी दर्शाया गया है। इस पृष्ठभूमि में, हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि उच्च न्यायालय का निर्णय स्पष्ट रूप से मनमाना होने के अलावा 1961 के नियमों के अधिकार क्षेत्र से बाहर होने के कारण से ग्रसित था।

ii. <u>वैध अपेक्षा</u>

17. याचिकाओं के इन समूह में हमारे विचार के लिए एक और महत्वपूर्ण पहलू यह है कि क्या उच्च न्यायालय का निर्णय याचिकाकर्ताओं की वैध अपेक्षा को विफल करता है। संविधान के अनुच्छेद 233 में प्रावधान है कि किसी भी राज्य में जिला न्यायाधीशों के रूप में तैनात किए जाने वाले व्यक्तियों की नियुक्ति राज्य के राज्यपाल द्वारा ऐसे राज्य के संबंध में अधिकार क्षेत्र का प्रयोग करने वाले उच्च न्यायालय के परामर्श से की जाएगी। इसके अलावा, अनुच्छेद 235 उच्च न्यायालय को जिला न्यायाधीशों की नियुक्ति और पदोन्नति सहित जिला न्यायालयों पर नियंत्रण निहित करता है। न्यायिक प्रशासन की प्रभावशीलता का रखरखाव पूरी तरह से उच्च न्यायालय के नियंत्रण और अधिकार क्षेत्र में है। 6 राज्यपाल, उच्च न्यायालय के परामर्श से, जिला न्यायाधीशों के पद के लिए उपयुक्त उम्मीदवारों के चयन के लिए नियुक्ति की विधि और आवश्यक पात्रता मानदंड निर्धारित करने वाले नियम निर्धारित करता है। 1961 के नियमों के अनुसार, केरल के उच्च न्यायालय को नियुक्ति प्राधिकरण के रूप में नामित किया गया था और लिखित परीक्षा और मौखिक परीक्षा आयोजित करने की जिम्मेदारी सौंपी गई थी। उच्च न्यायालय की कार्रवाई, अपने

सार्वजनिक कर्तव्य के पालन में, इस वैध अपेक्षा को जन्म देगा कि उम्मीदवारों के चयन की प्रक्रिया निष्पक्ष और गैर-मनमाना होगी।

ए. सामान्य कानून के तहत वैध अपेक्षा का सिद्धांत

18. सार्वजनिक कानून में वैध अपेक्षा के सिद्धांत का आधार व्यक्तियों के साथ सरकारी व्यवहार में निष्पक्षता और गैर-मनमानी के सिद्धांतों पर आधारित है। यह मान्यता देता है कि एक सार्वजनिक प्राधिकरण का वादा या पिछला आचरण एक वैध अपेक्षा को जन्म देगा। यह सिद्धांत इस धारणा पर आधारित है कि सार्वजनिक अधिकारियों को अपने सार्वजनिक कर्तव्यों का पालन करते समय अपने वादों या पिछली प्रथाओं का सम्मान करना चाहिए। किसी अपेक्षा की वैधता का अनुमान लगाया जा सकता है यदि यह कानून, प्रथा या स्थापित प्रक्रिया में बद्धमूल है।

19. आधुनिक अर्थ में सिद्धांत की उत्पत्ति का आधिकारिक रूप से **श्मिट बनाम गृह** मामलों के राज्य सचिव में प्रभुवर डेनिंग की राय से पता लगाया जा सकता है। उस मामले में, गृह सचिव ने याचिकाकर्ताओं को कॉलेज ऑफ साइंटोलॉजी में अध्ययन के उद्देश्यों के लिए यूनाइटेड किंगडम में प्रवेश करने की सीमित अनुमति दी समय अवधि समाप्त होने के बाद, याचिकाकर्ताओं ने अपने परमिट के विस्तार के लिए गृह सचिव के पास आवेदन किया। गृह सचिव ने विस्तार देने से इनकार कर दिया। हालांकि अदालत ने याचिकाकर्ताओं द्वारा लाए गए दावे को खारिज कर दिया, प्रभुवर डेनिंग ने कहा कि याचिकाकर्ता को अनुमत समय के लिए रुकने की अनुमति देने की वैध उम्मीद होगी। ऐसी स्थिति में, यह देखा गया कि याचिकाकर्ता को एक अभ्यावेदन देने का अवसर दिया जाना चाहिए था यदि समय अवधि की समाप्ति से पहले उसका परमिट रद्द कर दिया गया था। वैध अपेक्षा के सिद्धांत के बारे में प्रभुवर डेनिंग की अवधारणा एक प्रक्रियात्मक संरक्षण थी-एक वैध अपेक्षा को पीड़ित व्यक्ति को सुनने का अवसर प्रदान किए बिना अस्वीकार नहीं किया जा सकता था।

20. **ओ'रेली बनाम मैकमैन**, में हाउस ऑफ लॉर्ड्स को दर्शनार्थी मंडल द्वारा पारित आदेश की वैधता पर निर्णय लेने के लिए कहा गया था ताकि वादी के खिलाफ जेल के नियमों और प्राकृतिक न्याय के सिद्धांतों का उल्लंघन करते हुए जुर्माना लगाया जा सके। प्रभुवर डिप्लॉक ने कहा कि वैध अपेक्षा के सिद्धांत ने प्रभावित पक्ष को प्रतिकूल कार्रवाई की वैधता को इस आधार पर चुनौती देने का अधिकार दिया कि प्राधिकरण ने प्राकृतिक न्याय के सिद्धांतों का पालन करने में विफलता सहित कानून द्वारा उसे प्रदत्त शक्तियों से परे काम किया था। प्रभुवर डिप्लॉक ने व्यक्तियों के साथ अपने व्यवहार में निष्पक्ष रूप से कार्य करने के लिए सार्वजनिक अधिकारियों के कर्तव्य के संदर्भ में वैध अपेक्षा के सिद्धांत को दोहराया।

21. वैध अपेक्षा के सिद्धांत को हांगकांग के **अटॉर्नी जनरल बनाम एनजी युएन शिउ** में प्रिवी काउंसिल के निर्णय में और अधिक प्रोत्साहन मिला। उस मामले में, एक वरिष्ठ आप्रवासन अधिकारी ने घोषणा की कि चीन से प्रत्येक अवैध प्रवेशकर्ता के खिलाफ निर्वासन आदेश पारित करने से पहले उनका साक्षात्कार लिया जाएगा। प्रत्यर्थी, चीन से एक अवैध प्रवेशकर्ता, को हिरासत में लिया गया और सुनवाई के किसी भी अवसर के बिना उसके खिलाफ हटाने के आदेश पारित किए गए। इसलिए, मुद्दा यह था कि क्या प्रत्यर्थी को आप्रवासन अधिकारी द्वारा प्रत्यावर्तन से पहले सुनवाई के अनुदान की वैध अपेक्षा थी। यह अभिनिर्धारित किया गया था कि एक सार्वजनिक प्राधिकरण अपने उत्तरदायित्व से बाध्य है। प्रभुवर फ्रेजर ने वैध अपेक्षाओं की रूपरेखा को निम्नलिखित शब्दों में समझायाः

> "अपेक्षाएँ सार्वजनिक प्राधिकरण द्वारा या उसकी ओर से दिए गए किसी बयान या वचन पर आधारित हो सकती हैं, जिसका निर्णय लेने का कर्तव्य है, यदि प्राधिकरण ने अपने अधिकारियों के माध्यम से इस तरह से कार्य किया है जो उसे इस तरह की जांच से वंचित करने के लिए अच्छे प्रशासन के साथ अनुचित या असंगत बना देगा।"

प्रभुवर फ्रेजर की राय के अनुसार, वैध अपेक्षा के सिद्धांत का प्राथमिक औचित्य यह है कि एक सार्वजनिक प्राधिकरण को निष्पक्षता और अच्छे प्रशासन के हित में अपने वादे को लागू करना चाहिए।

22. वैध अपेक्षा के सिद्धांत को लोकस क्लासिकस में प्रभुवर डिप्लॉक द्वारा **सिविल सेवा संघ परिषद बनाम सिविल सेवा मंत्री कानून** न्यायाशास्त्र में स्पष्ट किया गया था। प्रभुवर डिप्लॉक ने अभिनिर्धारित किया कि न्यायालय उन स्थितियों में प्रशासनिक निर्णयों की न्यायिक समीक्षा की शक्ति का प्रयोग कर सकते हैं जहां इस तरह का निर्णय किसी व्यक्ति को कुछ लाभ या नफा से वंचित करता है जोः

(i) उन्हें अतीत में निर्णय निर्माता द्वारा उपयोग करने की अनुमति दी गई थी और जिसे वे वैध रूप से जारी रखने की अनुमति की उम्मीद कर सकते हैं जब तक कि उन्हें इसे वापस लेने के लिए कुछ तर्कसंगत आधार नहीं बताए गए हैं, जिस पर उन्हें टिप्पणी करने का अवसर दिया गया है; या

(ii) निर्णय-निर्माता द्वारा उन्हें आश्वासित किया गया है कि उन्हें कारण बताने का अवसर दिए बगैर लाभ या नफा को वापस नहीं लिया जाएगा, यह तर्क देने के वास्ते कि लाभ या नफा में वापस नहीं लिया जाना चाहिए।

23. वैध अपेक्षा का सिद्धांत प्रशासनिक कार्यों में प्रक्रियात्मक निष्पक्षता और औचित्य की गारंटी देने के लिए एक सामान्य कानून सिद्धांत के रूप में उभरा। अदालतों द्वारा व्यक्तियों के साथ अपने व्यवहार में सार्वजनिक अधिकारियों द्वारा कुछ हद तक प्रक्रियात्मक निष्पक्षता की आवश्यकता के लिए वैध अपेक्षा विकसित की गई थी। सुनिश्चित लाभ या नफा से इनकार को सार्वजनिक प्राधिकरण के निर्णय को चुनौती देने के आधार के रूप में स्वीकार किया गया था।

ख. भारतीय कानून के तहत वैध अपेक्षा का सिद्धांत।

24. 1990 के दशक तक, भारतीय न्यायालयों ने संविधान के अनुच्छेद 14 के तहत प्रक्रियात्मक निष्पक्षता और गैर-मनमानेपन के संदर्भ में वैध अपेक्षा के सिद्धांत को शामिल किया। **भारत के खाद्य निगम बनाम कामधेनू पशु चारा उद्योग** में, इस न्यायालय ने अभिनिर्धारित किया कि जनता अधिकारियों का कर्तव्य है कि वे अपनी शक्तियों का उपयोग सार्वजनिक भलाई के उद्देश्यों के लिए करें। यह कर्तव्य नागरिकों की ओर से एक वैध अपेक्षा पैदा करता है कि राज्य और उसके साधनों के साथ उनकी बातचीत में उनके साथ निष्पक्ष और गैर-मनमाने तरीके से व्यवहार किया जाए। इस न्यायालय ने अभिनिर्धारित किया कि एक कार्यपालक प्राधिकारी द्वारा किसी प्रभावित व्यक्ति की वैध अपेक्षा पर विचार किए बिना लिया गया निर्णय शक्ति का दुरुपयोग हो सकता हैः

> "7. [...] इसलिए, किसी राज्य की कार्रवाई में गैर-मनमानी की इस आवश्यकता को पूरा करने के लिए, निर्णय से प्रभावित होने की संभावना वाले व्यक्तियों की उचित या वैध अपेक्षाओं पर विचार करना और उन्हें उचित महत्व देना आवश्यक है या अन्यथा कि शक्ति के प्रयोग में अन्याय किसी दिए गए मामले में निर्णय के प्रामाणिक अधिकार को लागू करने के अलावा शक्ति का दुरुपयोग या अधिकता हो सकता है। इस तरह लिया गया फैसला को मनमानेपन के आधार पर चुनौती का सामना करना पड़ेगा। कानून का शासन शक्ति के प्रयोग में विवेक को पूरी तरह से समाप्त नहीं करता है, क्योंकि यह अवास्तविक है, लेकिन न्यायिक समीक्षा द्वारा इसके प्रयोग पर नियंत्रण का प्रावधान करता है।"

न्यायालय ने अभिनिर्धारित किया कि दावेदार की अपेक्षा वैध है या नहीं, यह तथ्य का प्रश्न है जिसका निर्णय व्यापक लोक हित के विरुद्ध दावेदार की अपेक्षा को मापने के बाद किया जाना चाहिए। इस प्रकार, वैध अपेक्षाओं के दावों से निपटने के दौरान, न्यायालय

को व्यापक सार्वजनिक हित के खिलाफ दावेदार की वैध अपेक्षा को अनिवार्य रूप से संतुलित करना होगा।

25. **भारत संघ बनाम हिंदुस्तान विकास निगम**, में इस न्यायालय ने वैध अपेक्षा के सिद्धांत की रूपरेखा को निम्नलिखित शब्दों में स्पष्ट कियाः(i) किसी सार्वजनिक प्राधिकरण के प्रतिनिधित्व या पिछले आचरण के आधार पर वैध अपेक्षा उत्पन्न होती है; (ii) किसी अपेक्षा की वैधता का अनुमान केवल तभी लगाया जा सकता है जब वह कानून या प्रथा की मंजूरी या नियमित या प्राकृतिक क्रम में अपनाई जाने वाली एक स्थापित प्रक्रिया पर आधारित हो; (iii) वैध अपेक्षा न्यायिक समीक्षा के लिए दावेदार को स्थान प्रदान करती है; (iv) सिद्धांत ज्यादातर निर्णय से पहले निष्पक्ष सुनवाई के अधिकार के लिए सीमित है और सीधे राहत का दावा करने की गुंजाइश नहीं देता है; (v) सार्वजनिक प्राधिकरण को सार्वजनिक हित पर हावी होकर किसी व्यक्ति की वैध अपेक्षा से इनकार करने को उचित ठहराना चाहिए; और (vi) अदालतें नीति या सार्वजनिक हित के माध्यम से लिए गए प्राधिकरण के निर्णय में हस्तक्षेप नहीं कर सकती हैं जब तक कि ऐसा निर्णय शक्ति के दुरुपयोग के बराबर न हो।

26. **हिन्दुस्तान विकास निगम** (ऊपर) में, यह न्यायालय एक मूल अधिकार की रक्षा के लिए वैध अपेक्षा के सिद्धांत के उपयोग के खिलाफ आगाह किया। फिर भी, बाद के निर्णयों की एक श्रृंखला में, इस न्यायालय ने स्वीकार किया कि वैध अपेक्षाओं का सिद्धांत प्रक्रियात्मक और मूल दोनों अधिकारों का स्रोत बन गया है। **पंजाब कम्युनिकेशन लिमिटेड बनाम भारत संघ** में, इस न्यायालय ने प्रक्रियात्मक और मूल वैध अपेक्षा के बीच के अंतर को निम्नलिखित शब्दों में समझायाः

> "इसका प्रक्रियात्मक भाग एक अभ्यावेदन से संबंधित है कि निर्णय लेने से पहले एक सुनवाई या अन्य उपयुक्त प्रक्रिया निर्धारित की जाएगी। सिद्धांत का मूल भाग यह

है कि यदि यह प्रतिनिधित्व किया जाता है कि एक मूल प्रकृति का लाभ दिया जाएगा या यदि व्यक्ति पहले से ही लाभ प्राप्त कर रहा है कि इसे जारी रखा जाएगा और इसमें काफी बदलाव नहीं किया जाएगा, तो इसे लागू किया जा सकता है।"

प्रक्रियात्मक वैध अपेक्षा के सिद्धांत पर आधारित एक दावा उत्पन्न होता है जहां एक दावेदार सार्वजनिक प्राधिकरण से निर्णय लेने से पहले एक विशेष प्रक्रिया का पालन करने की उम्मीद करता है। यह मूल वैध अपेक्षा के सिद्धांत के विपरीत है जहां एक दावेदार सार्वजनिक प्राधिकरण के मौजूदा वादे या व्यवहार के आधार पर एक मूल लाभ प्रदान करने की उम्मीद करता है। मूल वैध अपेक्षा के सिद्धांत को अब सामान्य कानून के साथ-साथ भारतीय न्यायशास्त्र दोनों के अभिन्न अंग के रूप में स्वीकार किया गया है।

सी. पर्याप्त वैध अपेक्षा

27. **आर बनाम उत्तर और पूर्वी डेवोन स्वास्थ्य प्राधिकरण** में, पूर्व पक्ष कौघलान में अपील न्यायालय ने यह निर्धारित करने के लिए शक्ति के दुरुपयोग के परीक्षण को निर्धारित किया कि क्या एक सार्वजनिक प्राधिकरण प्रथम दृष्टया वैध अपेक्षा से लचीला सकता है। यह अभिनिर्धारित किया गया था कि सार्वजनिक अधिकारियों द्वारा एक ठोस वैध अपेक्षा की हताशा अनुचित होगी और शक्ति के दुरुपयोग के बराबर होगी। महत्वपूर्ण रूप से, यह अभिनिर्धारित किया गया था कि शक्तियों का दुरुपयोग अदालतों के लिए कार्यकारी कार्यों की न्यायिक समीक्षा करने का आधार है।

28. **नादराजा बनाम गृह विभाग के लिए राज्य सचिव**, में अपील न्यायालय ने अच्छे प्रशासन के सिद्धांतों को आधार बनाकर मूल वैध अपेक्षा के सिद्धांत में एक और पहलू जोड़ा। महत्वपूर्ण रूप से, अदालत ने इस बात की पहचान की कि निरंतरता और ईमानदारी एक अच्छे प्रशासन के सिद्धांत हैं। लॉज एल. जे. ने निम्नलिखित शब्दों में वैध अपेक्षा के सिद्धांत में अंतर्निहित सिद्धांतों की व्याख्या कीः

"68. सिद्धांत की खोज निश्चित रूप से उस विषय के साथ शुरू होती है जो वैध अपेक्षा मामलों के माध्यम से वर्तमान है। इसे इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है। जहाँ किसी सार्वजनिक प्राधिकरण ने कोई वचन जारी किया हो या कोई प्रथा अपनाई हो। जो यह दर्शाता है कि यह किसी दिए गए क्षेत्र में कैसे कार्य करने का प्रस्ताव करता है, कानून को वादे या अभ्यास का सम्मान करने की आवश्यकता होगी जब तक कि ऐसा न करने का अच्छा कारण न हो। इस प्रस्ताव के पीछे क्या सिद्धांत है?इसे खोजना ज्यादा दूर नहीं है। कहा जाता है कि यह निष्पक्षता पर आधारित है और इसमें कोई संदेह नहीं है कि सामान्य रूप से ऐसा ही है। **मैं इसे अधिक व्यापक रूप से अच्छे प्रशासन की आवश्यकता के रूप में व्यक्त करना पसंद करूंगा, जिसके द्वारा सार्वजनिक निकायों को जनता के साथ सीधे और लगातार व्यवहार करना चाहिए।"**

(जोर दिया गया)

इसके अलावा, लॉज एलजे ने माना कि एक सार्वजनिक प्राधिकरण अपने वादे या भविष्य के आचरण से पीछे हट सकता है यदि उसका निर्णयः(i) कानूनी कर्तव्य के अनुसरण में है; या (ii) सार्वजनिक हित में सार्वजनिक निकाय द्वारा अपनाए गए वैध उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए एक आनुपातिक प्रतिक्रिया है।

29. **कफलान** (ऊपर) में अपील न्यायालय के निर्णय ने वैध अपेक्षा के सिद्धांत के निर्माण में सामान्य कानून में एक क्रमिक बदलाव को चिह्नित किया। **श्मिट** (ऊपर) और **सिविल सेवा परिषद संघ** (ऊपर) में, सिद्धांत के अनुप्रयोग को सार्वजनिक प्राधिकरणों द्वारा निर्णय लेने में निष्पक्षता के आधार पर उचित ठहराया गया था। हालाँकि, सिद्धांत के एक अधिक सूक्ष्म पहलू की ओर क्रमिक बदलाव तब शुरू हुआ जब अंग्रेजी अदालतों ने अच्छे प्रशासन की आवश्यकता के रूप में सार्वजनिक अधिकारियों को अपने वादों या प्रथाओं का

सम्मान करने की आवश्यकता शुरू कर दी। अच्छे प्रशासन की विशेषता सार्वजनिक अधिकारियों की ओर से निरंतर, नियमित और सीधे-सीधे आचरण था। इसके अलावा, शक्ति के दुरुपयोग के रूप में निर्णय लेने में अन्याय की अवधारणा को **कफलान** (ऊपर) में अदालत द्वारा स्थापित किया गया था। इस प्रकार, अच्छे प्रशासन की आवश्यकता और सत्ता के दुरुपयोग को रोकने के लिए सार्वजनिक प्राधिकरणों के प्रशासनिक कार्यों को कम किया गया।

30. सामान्य कानून में उपरोक्त वृद्धि का भी भारतीय कानून पर प्रभाव था। **राम प्रवेश सिंह बनाम बिहार राज्य**, में यह न्यायालय वैध अपेक्षा की अवधारणा को कुछ लाभ, राहत या उपचार की उचित, तार्किक और वैध अपेक्षा के रूप में समझायाः

> "15. वैध अपेक्षा क्या है?जाहिर है, यह कानूनी अधिकार नहीं है। यह एक लाभ, राहत या उपचार की अपेक्षा है, जो आम तौर पर एक वादे या स्थापित अभ्यास से हो सकती है। **स्थापित अभ्यास पद "निर्णय लेने वाले प्राधिकारी के नियमित, सुसंगत, पूर्वानुमेय और निश्चित आचरण, प्रक्रिया या गतिविधि को संदर्भित करता है। अपेक्षा न्यायसंगत, यानी उचित, तार्किक वैध होनी चाहिए।** कोई भी अपेक्षा जो छिटपुट या आकस्मिक या यादृच्छिक कार्यों पर आधारित है, या जो अनुचित, अतार्किक या अमान्य है, एक वैध अपेक्षा नहीं हो सकती है।"

(जोर दिया गया)

**राम प्रवेश सिंह** (ऊपर) में, इस न्यायालय ने उल्लेख किया कि वैध अपेक्षा के सिद्धांत की प्रभावशीलता कमजोर है क्योंकि दावेदार केवल निम्नलिखित दो राहतों का हकदार हैः (i) अपेक्षा को नकारने से पहले कारण दिखाने का अवसर; और (ii) इनकार के कारण के बारे में स्पष्टीकरण। न्यायालय ने आगे स्पष्ट किया कि वैध अपेक्षा पर आधारित दावे को लोक हित, नीति में परिवर्तन, दावेदार के आचरण, या सार्वजनिक प्राधिकरण द्वारा

प्रदान किए गए किसी अन्य वैध या वास्तविक कारण जैसे कारकों पर नकार दिया जा सकता है।

31. वैध अपेक्षा के सिद्धांत से निपटने के दौरान, एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू जिससे अदालतों को जूझना पड़ा है, वह है अपेक्षा की "वैधता" का निर्धारण करना। अदालत किसी अपेक्षा की वैधता का अनुमान तभी लगा सकती है जब वह कानून की मंजूरी पर आधारित हो। **सचिव, कर्नाटक राज्य बनाम उमादेवी**, में इस न्यायालय की एक संविधान पीठ ने कहा कि एक संविदात्मक या आकस्मिक कर्मचारी सेवा में नियमित होने की वैध अपेक्षा का दावा नहीं कर सकता है क्योंकि ऐसी नियुक्तियां कुछ स्थितियों में लोक सेवा आयोग के साथ परामर्श सहित चयन के लिए उचित प्रक्रियाओं का पालन करने के बाद ही की जा सकती हैं। अपेक्षा की वैधता तथ्य का सवाल है और इसे व्यापक सार्वजनिक हित के खिलाफ दावेदार की अपेक्षा को तौलने के बाद निर्धारित किया जाना चाहिए।

32. इस न्यायालय ने लगातार यह अभिनिर्धारित किया है कि एक वैध अपेक्षा हमेशा व्यापक सार्वजनिक हित को लाभान्वित करने के वास्ते होनी चाहिए। **सेठी ऑटो सर्विस स्टेशन बनाम डी.डी.ए.**, में इस न्यायालय ने स्पष्ट किया कि वैध अपेक्षा वहाँ लागू नहीं होगी जहाँ सार्वजनिक प्राधिकरण का निर्णय सार्वजनिक नीति पर आधारित हो या सार्वजनिक हित में हो, जब तक कि कार्रवाई शक्ति के दुरुपयोग के बराबर न हो। वैध अपेक्षा के सिद्धांत को प्रशासनिक विवेक के वैध प्रयोग को रोकने के लिए लागू नहीं किया जा सकता है। **पी. सुशीला बनाम विश्वविद्यालय अनुदान आयोग**, में दावेदारों ने यू. जी. सी. विनियमों को चुनौती दी, जिसमें व्याख्याता या सहायक प्रोफेसर के पद पर नियुक्त होने के इच्छुक उम्मीदवारों के लिए नेट परीक्षा में अर्हता प्राप्त करना अनिवार्य कर दिया गया था। न्यायालय ने अभिनिर्धारित किया कि दावेदारों की वैध अपेक्षा व्यापक लोक हित के अनुरूप

होनी चाहिए-जिसमें यू. जी. सी. द्वारा शासित शैक्षणिक संस्थानों में पढ़ाने के लिए उच्च योग्यता प्राप्त सहायक प्रोफेसर और व्याख्याता हों।

33. **केरल राज्य पेय पदार्थ (एम एंड एम) निगम लिमिटेड बनाम पी पी सुरेश**, में राज्य सरकार ने अरक पर प्रतिबंध लगाने का फैसला किया, जिसके परिणामस्वरूप हजारों अरक श्रमिकों ने अपनी आजीविका खो दी। 2002 में, सरकार ने एक आदेश जारी किया जिसमें याचिकाकर्ता निगम में दैनिक वेतन भोगी श्रमिकों के पद के लिए सभी रिक्तियों का पच्चीस प्रतिशत उन अरक श्रमिकों के लिए आरक्षित किया गया, जिन्होंने अरक प्रतिबंध के कारण आजीविका खो दी थी। 2004 में, सरकार ने मानदंडों को यह प्रावधान करके बदल दिया कि आरक्षण नीति केवल अरक श्रमिकों के आश्रित बेटों के लिए अलग की जाएगी। राज्य सरकार ने इस न्यायालय के समक्ष समर्पित किया कि अरैक श्रमिकों को रोजगार प्रदान करना व्यावहारिक रूप से कठिन पंथ था। न्यायालय ने स्वीकार किया कि श्रमिकों को दैनिक वेतन भोगी श्रमिकों के रूप में नियुक्ति के लिए विचार किए जाने की वैध अपेक्षा थी। हालाँकि, इसने राज्य सरकार द्वारा अरक श्रमिकों से किए गए वादे से पीछे हटने के लिए उद्धृत अभिभावी सार्वजनिक हित को विश्वास दिलाया। जनहित के खिलाफ श्रमिकों की अपेक्षाओं पर विचार करने के बाद, इस न्यायालय ने माना कि श्रमिकों की अपेक्षाएं वैध नहीं थीं।

34. **झारखंड राज्य बनाम ब्रह्मपुत्र धातु** में इस न्यायालय के समक्ष यह मुद्दा था कि क्या प्रत्यर्थी उत्पादन शुरू होने से पांच वर्षों की अवधि के लिए औद्योगिक नीति, 2012 के तहत बिजली शुल्क पर छूट या कटौती का दावा करने का हकदार था। हालांकि नीति की घोषणा 2012 में की गई थी, छूट अधिसूचना 2015 में संभावित प्रभाव से जारी की गई थी। इस मुद्दे पर विचार करते हुए कि क्या राज्य सरकार ने प्रतिवादी की वैध अपेक्षा को विफल कर दिया है, हम में से एक (डी. वाई. चंद्रचूड़, न्यायाधीश) ने कहा कि राज्य में नागरिकों

द्वारा व्यक्त किए गए विश्वास के कारण सार्वजनिक अधिकारियों द्वारा किए गए अभ्यावेदन को ईमानदार मानकों पर रखा जाना चाहिएः

> "41. [...] सार्वजनिक प्राधिकरणों द्वारा प्रतिनिधित्व को ईमानदार मानकों पर रखने की आवश्यकता है, क्योंकि नागरिक राज्य में अपने विश्वास के आधार पर अपना जीवन जीना जारी रखते हैं। वाणिज्यिक दुनिया में भी, व्यवसाय के मामले के आयोजन के लिए निश्चितता और निरंतरता आवश्यक है। जब सार्वजनिक अधिकारी इस विफलता के लिए नागरिकों को पर्याप्त कारण प्रदान किए बिना अपने अभ्यावेदन का पालन करने में विफल रहते हैं, तो यह राज्य में नागरिकों द्वारा व्यक्त किए गए विश्वास का उल्लंघन करता है। निवेश और व्यापार के लिए एक व्यापार अनुकूल वातावरण का उत्पति उस विश्वास पर निर्भर करता है जो सरकार द्वारा उत्पन्न अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए सरकार में स्थापित किया जा सकता है।"

35. **ब्रह्मपुत्र धातु** (उपरोक्त) मामले में, इस न्यायालय ने अभिनिर्धारित किया कि राज्य सरकार ने दावेदारों को बिजली शुल्क के भुगतान से छूट प्रदान करने के लिए अपनी औद्योगिक नीति, 2012 के तहत एक गंभीर प्रतिनिधित्व किया। हालाँकि, सरकार 2015 में तीन साल की देरी के बाद छूट नोटिस जारी करने के लिए कोई औचित्य प्रदान करने में विफल रही। इस न्यायालय ने कहा कि राज्य अपने सार्वजनिक कर्तव्यों का पालन करते हुए निष्पक्ष और पारदर्शी रूप से कार्य करने के लिए बाध्य है, और निजी नागरिकों और निजी व्यवसाय की पात्रता का कोई भी अभाव सार्वजनिक हित में आधारित आवश्यकता के आनुपातिक होना चाहिएः

> "53. [...] राज्य को इस औपनिवेशिक धारणा को त्याग देना चाहिए कि यह एक संप्रभु है जो अपनी इच्छानुसार अनुदान देता है। इसकी नीतियाँ वैध अपेक्षाओं को जन्म देती हैं कि राज्य सार्वजनिक क्षेत्र में जो कुछ भी प्रस्तुत करता है उसके

अनुसार कार्य करेगा। अपने सभी कार्यों में, राज्य निष्पक्ष रूप से, पारदर्शी तरीके से कार्य करने के लिए बाध्य है। यह मनमाना राज्य कार्रवाई के खिलाफ गारंटी की एक प्राथमिक आवश्यकता है जिसे संविधान का अनुच्छेद 14 अपनाता है। निजी नागरिकों और निजी व्यवसाय की पात्रता से वंचित होना सार्वजनिक हित में आधारित आवश्यकता के समानुपाती होना चाहिए।"

36. वैध अपेक्षा का सिद्धांत किसी नीति को निर्धारित करने या उसे वापस लेने की सार्वजनिक अधिकारियों की शक्ति को रोकना या बाधित नहीं करता है। सार्वजनिक प्राधिकरण के पास अपनी कार्यकारी शक्ति के भीतर उपलब्ध विकल्पों की पूरी श्रृंखला का प्रयोग करने का विवेकाधिकार है। सार्वजनिक प्राधिकरण को अक्सर किसी विशेष नीतिगत निर्णय पर पहुंचने से पहले विभिन्न कारकों, चिंताओं और हितों को ध्यान में रखना पड़ता है। अदालतें आम तौर पर सार्वजनिक प्राधिकरणों के एक प्रामाणिक निर्णय में हस्तक्षेप करने में सतर्क रहती हैं जो एक वैध अपेक्षा से इनकार करती है बशर्ते कि ऐसा निर्णय व्यापक सार्वजनिक हित में लिया गया हो। इस प्रकार, जनहित वैध अपेक्षा के सिद्धांत के अनुप्रयोग पर एक सीमा के रूप में कार्य करता है। न्यायालयों को यह निर्धारित करना होता है कि क्या जनहित दावेदार की वैध अपेक्षा से अधिक बाध्यकारी और पर्याप्त है। एक संतुलन अभ्यास करते समय, अदालतों को अक्सर वैध अपेक्षा के दावे को हटाने के लिए आवश्यक बोझ और सबूत के मानक के मुद्दों से जूझना पड़ता है।

37. **पापोनेट बनाम त्रिनिदाद और टोबैगो के महान्यायवादी**, में प्रिवी काउंसिल ने माना कि एक दावेदार को केवल अपनी अपेक्षा की वैधता साबित करनी होती है। इस संबंध में, दावेदार को यह स्थापित करना चाहिए कि अपेक्षा एक मौजूदा वादे या व्यवहार पर आधारित है। एक बार जब दावेदार अपनी वैध अपेक्षा को स्थापित कर लेता है, तो किसी भी प्रमुख सार्वजनिक हित की पहचान करके अपेक्षा की हताशा को सही ठहराने की जिम्मेदारी

प्राधिकरण पर आ जाती है। यह न्यायालय वैध अपेक्षा के मामलों में समान बोझ आवश्यकताओं को लागू कर रहा है।

38. कार्रवाई में निष्पक्षता के सिद्धांत के लिए आवश्यक है कि सार्वजनिक अधिकारियों को उनके प्रतिनिधित्व के लिए जवाबदेह ठहराया जाए, क्योंकि नागरिकों के जीवन पर राज्य का गहरा प्रभाव पड़ता है। अच्छे प्रशासन के लिए सार्वजनिक अधिकारियों को पूर्वानुमेय तरीके से कार्य करने और किए गए वादों या स्थापित प्रथाओं का सम्मान करने की आवश्यकता होती है जब तक कि ऐसा न करने का कोई अच्छा कारण न हो। **नादराजा** (ऊपर) में, लॉज़ एल. जे. ने अभिनिर्धारित किया कि सार्वजनिक प्राधिकरण को निष्पक्ष रूप से यह उचित ठहराना चाहिए कि एक वैध अपेक्षा को अस्वीकार करने में एक प्रमुख सार्वजनिक हित है। हमारी राय है कि एक सार्वजनिक प्राधिकरण को वैध अपेक्षा के दावे को विफल करने के लिए, उसे प्रासंगिक सामग्री न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत करके निष्पक्ष रूप से प्रदर्शित करना चाहिए कि उसका निर्णय जनहित में था। यह मानक अच्छे प्रशासन के सिद्धांतों के अनुरूप है जिसके लिए आवश्यक है कि सार्वजनिक शक्ति के दुरुपयोग को रोकने और नागरिकों के लिए निष्पक्षता सुनिश्चित करने के लिए राज्य के कार्यों को ईमानदार मानकों पर रखा जाना चाहिए।

डी. गैर-मनमानी के पहलुओं के रूप में निरंतरता और पूर्वानुमेयता।

39. न्यायशास्त्र में वैध अपेक्षा के सिद्धांत से संबंधित एक अन्य महत्वपूर्ण विकास गैर-मनमानी के एक पहलू के रूप में निर्णय लेने में पूर्वानुमेयता और निरंतरता पर जोर देना है। **राम प्रवेश सिंह** (ऊपर) में, यह माना गया था कि वैध अपेक्षा का सिद्धांत एक नियमित, सुसंगत, पूर्वानुमेय और निश्चित आचरण पर लागू होता है। इसी तरह, **नोएडा उद्यमी संघ बनाम नोएडा** में इस न्यायालय ने कहा कि एक सिद्धांत या नियम में किसी भी आधार के बिना एक कार्यकारी निर्णय अननुमेय है। यह अभिनिर्धारित किया गया कि इस तरह की

निर्णय लेने की प्रक्रिया वैध अपेक्षा के सिद्धांत के विपरीत है और कानून के शासन के विरोधी है।

40. **बिहार राज्य बनाम श्यामा नंदन मिश्रा** में हाल ही में लिए गए निर्णय में इस न्यायालय को राष्ट्रीयकृत विद्यालयों के माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के बराबर व्याख्याताओं के साथ व्यवहार करने के राज्य सरकार के निर्णय की वैधता निर्धारित करने के लिए कहा गया था। इस न्यायालय की दो-न्यायाधीशों की पीठ ने कहा कि राज्य सरकार का निर्णय बिहार गैर-सरकारी माध्यमिक विद्यालय (नियंत्रण और प्रबंधन का अधिग्रहण) अधिनियम, 1981 के अधिकार क्षेत्र से बाहर है। इसके अलावा, न्यायालय ने मूल वैध अपेक्षा के सिद्धांत के आधार पर सरकार के फैसले की वैधता का परीक्षण किया। न्यायालय ने अभिनिर्धारित किया कि सरकार के निर्णय ने व्याख्याताओं की ठोस वैध अपेक्षाओं को अस्वीकार कर दिया क्योंकिः(i) सरकार ने कृत्रिम रूप से राष्ट्रीयकृत विद्यालयों के शिक्षकों के साथ व्याख्याताओं को समूहबद्ध करके व्याख्याताओं की पदोन्नति प्राप्त करने और अंतर-वरिष्ठता के आधार पर विभाग में उच्च पद प्राप्त करने की अपेक्षा को झुठलाया; और (ii) सरकार का निर्णय पिछले प्रतिनिधित्व के विपरीत था, इसमें किसी भी सम्मोहक सार्वजनिक हित का अभाव था, और इसलिए यह अनुचित था और शक्ति का दुरुपयोग था।

41. **श्यामा नंदन मिश्रा** (ऊपर) में, न्यायालय ने इस बात पर भी प्रकाश डाला कि नियमितता, पूर्वानुमेयता, निश्चितता और निष्पक्षता शासन के महत्वपूर्ण पहलू हैंः

> "36. ऊपर से संकेत लेते हुए, जहां मूल वैध अपेक्षा प्राधिकरण की शक्ति से परे नहीं है और न्यायालय इसकी रक्षा करने की स्थिति में है, राज्य को पाठ्यक्रम बदलने और उत्तरदाताओं की वैध अपेक्षा को झूठलाने की अनुमति नहीं दी जा सकती है। **जैसा कि है यह सर्वविदित है कि नियमितता, पूर्वानुमेयता, निश्चितता और निष्पक्षता सरकार की कार्रवाई के लिए आवश्यक सहवर्ती हैं और हमारी राय में बिहार सरकार**

**विवादित निर्णय द्वारा अपनी प्रतिबद्धता को बनाए रखने में विफल रही, जिसे हम उच्च न्यायालय द्वारा उचित रूप से निषेध करते पाते हैं।"**

(जोर दिया गया)

42. कानून के शासन में निहित एक संवैधानिक प्रणाली में, सार्वजनिक प्राधिकरणों के पास उपलब्ध विवेकाधिकार परिभाषित रूप से स्पष्ट सीमाओं के भीतर सीमित है। कानून के शासन की अवधारणा को रेखांकित करने वाला प्राथमिक सिद्धांत निर्णय लेने में निरंतरता और पूर्वानुमेयता है। सिद्धांत या नियम में किसी भी आधार के बिना लिया गया सार्वजनिक प्राधिकरण का निर्णय अप्रत्याशित है और इसलिए, कानून के शासन के लिए मनमाना और विरोधी है। कानून का शासन सार्वजनिक प्राधिकरणों से नागरिकों की अपेक्षाओं को स्थिर करके निष्पक्षता को बढ़ावा देता है। **एस.ई.बी.आई. बनाम सुनील कृष्ण खेतान**, में इस न्यायालय के हाल के एक फैसले में भी इस पर विचार किया गया था, जिसमें यह देखा गया था कि नियमितता और पूर्वानुमेयता अच्छे विनियमन और शासन की पहचान हैं। इस न्यायालय ने अभिनिर्धारित किया कि निश्चितता और निरंतरता कार्रवाई में निष्पक्षता और गैर-मनमानी के महत्वपूर्ण पहलू हैंः

**"59. […] किसी भी अच्छी नियामक प्रणाली को निश्चितता और निरंतरता के सिद्धांत को बढ़ावा देना और उसका पालन करना चाहिए, जिससे व्यक्ति को उनका दैनिक कार्यक्रम का हिस्सा के रुप में लेन-देन के परिणाम के बारे में आश्वासन मिलता है।** […] इसका मतलब यह नहीं है कि नियामक/अधिकारी पिछली प्रथा से विचलित नहीं हो सकते हैं, हालांकि इस तरह के किसी भी विचलन या परिवर्तन को वृहत्तर सार्वजनिक हित या नुकसान के विषय में कहा जाना चाहिए। **यह भारत के संविधान के अनुच्छेद 14 का अधिदेश है जिसमें राज्य द्वारा कार्रवाई में निष्पक्षता की आवश्यकता होती है एवं तत्व एवं सार में गैर-मनमानापन।** इसलिए, असंगति के

प्रश्न की जांच करने के लिए, विश्लेषण परिवर्तन की आवश्यकता और कार्यात्मक मूल्य को सुनिश्चित करने के लिए है, क्योंकि सुसंगति परिचालन प्रभावशीलता का मामला है।"

(जोर दिया गया)

43. वैध अपेक्षा के सिद्धांत के अनुप्रयोग के लिए अंतर्निहित आधार का विस्तार हुआ है और अच्छे प्रशासन के सिद्धांतों को शामिल करने के लिए विकसित हुआ है। चूंकि नागरिक राज्य में अपना विश्वास व्यक्त करते हैं, इसलिए राज्य की कार्रवाइयां और नीतियां वैध अपेक्षाओं को जन्म देती हैं कि राज्य एक सुसंगत, पारदर्शी और पूर्वानुमेय तरीके से कार्य करके अपने आश्वासन या पिछले अभ्यास का पालन करेगा। अच्छे प्रशासन के सिद्धांतों के लिए आवश्यक है कि सार्वजनिक प्राधिकरणों के निर्णयों को निरंतरता, पारदर्शिता और पूर्वानुमेयता की कसौटी का सामना करना चाहिए ताकि मनमाने ढंग से माने जाने से बचा जा सके और इसलिए अनुच्छेद 14 का उल्लंघन हो।

44. उपरोक्त चर्चा से, यह स्पष्ट है कि ठोस वैध अपेक्षा का सिद्धांत भारतीय प्रशासनिक कानून में निहित है, जो दी गई तथ्यात्मक स्थितियों में इसकी प्रयोज्यता पर सीमाओं के अधीन है। भारतीय न्यायशास्त्र का विकास सामान्य कानून के विकास के अनुरूप है। मूल वैध अपेक्षा के सिद्धांत को किसी सार्वजनिक प्राधिकरण के मौजूदा वादे या अभ्यास के आधार पर मूल लाभ या हक का दावा करने के लिए व्यक्तियों द्वारा सफलतापूर्वक लागू किया जा सकता है। हालांकि, यह स्पष्ट करना महत्वपूर्ण है कि वैध अपेक्षा का सिद्धांत सार्वजनिक अधिकारियों द्वारा लिए गए निर्णयों की न्यायिक समीक्षा के लिए एक स्वतंत्रता आधार के रूप में काम नहीं कर सकता है। इस तरह की सीमा को अब भारतीय न्यायशास्त्र में इस तथ्य पर विचार करते हुए अच्छी तरह से मान्यता दी गई है कि एक वैध अपेक्षा एक कानूनी अधिकार नहीं है। यह केवल एक मौजूदा वादे या अभ्यास के आधार पर लाभ या

राहत प्राप्त करने की अपेक्षा है। हालाँकि किसी सार्वजनिक प्राधिकरण द्वारा वैध अपेक्षा से इनकार करने के निर्णय को मनमाना, अनुचित या शक्ति का दुरुपयोग कहा जा सकता है, निर्णय की वैधता पर अनुच्छेद 14 के तहत समानता एवं गैर-मनमानापन के स्थापित सिद्धांतों पर ही किए जा सकते हैं। संक्षेप में, एक व्यक्ति जो वैध अपेक्षा के सिद्धांत के आधार पर लाभ या पात्रता का दावा करता है, उसे स्थापित करना होगाः((i) अपेक्षा की वैधता; और (ii) वैध अपेक्षा से इनकार करने से अनुच्छेद 14 का उल्लंघन हुआ।

**डी. वैध अपेक्षा के सिद्धांत का अनुप्रयोग**

45. वर्तमान मामले में उपर्युक्त सिद्धांतों को लागू करने के लिए, हम निम्नलिखित प्रश्नों को सूत्रबद्ध करना उचित समझते हैंः(i) उच्च न्यायालय ने या तो वादे या व्यवहार से खुद को किस बात के लिए प्रतिबद्ध किया है; (ii) क्या उच्च न्यायालय ने अपनी प्रतिबद्धता के संबंध में गैरकानूनी रूप से काम किया है; और (iii) इस न्यायालय को किस बात की अनुमति देनी चाहिए।

i. <u>उच्च न्यायालय ने खुद को किस बात के लिए प्रतिबद्ध किया है?</u>

46. 1961 के नियमों के नियम 2 (सी) (iii) में भौतिक समय पर यह प्रावधान किया गया है कि जिला और सत्र न्यायाधीशों के 25 प्रतिशत पदों पर लिखित परीक्षा और उच्च न्यायालय द्वारा आयोजित मौखिक परीक्षा में प्राप्त कुल अंकों/ग्रेड के आधार पर बार से सीधी भर्ती की जानी चाहिए। विशिष्ट रूप से परीक्षा की योजना यह निर्धारित करती है कि वाइवा वॉस के लिए कोई कट ऑफ अंक नहीं होंगे। इसके अलावा, 30 सितंबर 2015 की अधिसूचना में यह भी निर्धारित किया गया है कि सफल उम्मीदवारों की योग्यता सूची लिखित परीक्षा और मौखिक परीक्षा में प्राप्त कुल अंकों के आधार पर तैयार की जाएगी।

47. परीक्षा की योजना और 2015 की परीक्षा अधिसूचना के साथ सांविधिक नियम ने याचिकाकर्ताओं में यह उम्मीद पैदा की होगी कि चयनित उम्मीदवारों की योग्यता सूची लिखित परीक्षा और मौखिक परीक्षा में प्राप्त कुल अंकों के आधार पर तैयार की जाएगी। इसके अलावा, याचिकाकर्ताओं ने परीक्षा की योजना में व्यक्त शर्त को देखते हुए वाइवा वॉस के लिए कोई न्यूनतम कट-ऑफ की उम्मीद नहीं की होगी। याचिकाकर्ताओं की उपरोक्त दोनों अपेक्षाएं वैध हैं क्योंकि वे वैधानिक नियमों की मंजूरी, परीक्षा की योजना और उच्च न्यायालय द्वारा जारी 2015 की परीक्षा अधिसूचना पर आधारित हैं। इस प्रकार, उच्च न्यायालय ने लिखित परीक्षा और मौखिक परीक्षा में प्राप्त कुल अंकों के आधार पर सफल उम्मीदवारों की योग्यता सूची तैयार करने के लिए कानूनी रूप से खुद को प्रतिबद्ध किया।

ii. <u>क्या उच्च न्यायालय ने अपनी प्रतिबद्धता के संबंध में गैरकानूनी तरीके से काम किया है?</u>

48. उच्च न्यायालय की प्रशासनिक समिति ने आशंका व्यक्त की कि लिखित परीक्षा में अच्छा प्रदर्शन करने वाले उम्मीदवार का जिला और सत्र न्यायाधीश के पद पर चयन किया जाएगा, भले ही उन्होंने मौखिक परीक्षा में खराब प्रदर्शन किया हो। प्रशासनिक समिति ने पाया कि ऐसे उम्मीदवारों की भर्ती बड़े पैमाने पर जनता के लिए नुकसानदेह होगी क्योंकि उनके पास केवल "किताबी" ज्ञान था और उनमें व्यावहारिक ज्ञान की कमी थी। ऐसी स्थिति से बचने के लिए, उच्च न्यायालय की प्रशासनिक समिति ने मौखिक परीक्षा में न्यूनतम कट-ऑफ लागू करने का फैसला किया। प्रशासनिक समिति के निर्णय को उच्च न्यायालय की पूर्ण पीठ ने मंजूरी दी।

49. संविधान उच्च न्यायालयों को अपने अधिकार क्षेत्र में न्यायिक अधिकारियों का चयन करने का अधिकार देता है। उच्च न्यायालय, एक संवैधानिक और सार्वजनिक प्राधिकरण होने के नाते, अपने प्रशासनिक कर्तव्यों का पालन करते समय अच्छे प्रशासन के

सिद्धांतों को ध्यान में रखना होगा। अच्छे प्रशासन के सिद्धांतों के लिए आवश्यक है कि सार्वजनिक प्राधिकरणों को निष्पक्ष, सुसंगत और पूर्वानुमेय तरीके से कार्य करना चाहिए।

50. उच्च न्यायालय ने प्रस्तुत किया कि याचिकाकर्ता की ठोस वैध अपेक्षा की हताशा व्यापक सार्वजनिक हित में थी-जिला न्यायाधीशों के पद के लिए व्यावहारिक ज्ञान के साथ उपयुक्त उम्मीदवारों का चयन। वास्तव में, यह जनहित में है कि हमारे पास भारतीय न्यायपालिका में सेवारत उपयुक्त उम्मीदवार हैं। हालांकि, उपयुक्त उम्मीदवारों के चयन के लिए मानदंड वैधानिक नियमों में निर्धारित किए गए हैं। जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, उच्च न्यायालय ने वाइवा वॉस के लिए न्यूनतम कट-ऑफ मार्क लागू करने के लिए 2017 में 1961 के नियमों में संशोधन किया था। संशोधित नियम 2 (सी) नीचे दिया गया हैः

> "2. नियुक्ति की विधि-(1) सेवा में नियुक्ति निम्नानुसार की जाएगीः
>
> [...]
>
> (सी) सेवा में बीस प्रतिशत पदों को बार के सदस्यों से सीधी भर्ती द्वारा भरा जाएगा। भर्ती एक प्रतियोगी परीक्षा के आधार पर होगी जिसमें एक लिखित परीक्षा और एक मौखिक परीक्षा शामिल होगी। [...] वाइवा वॉइस के लिए अधिकतम अंक 50 होगी। **सामान्य और अन्य पिछड़े वर्ग के उम्मीदवारों को न्यूनतम 40 प्रतिशत अंक प्राप्त करने होंगे और अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के उम्मीदवार को उत्तीर्ण होने के लिए न्यूनतम 35 प्रतिशत अंक प्राप्त करने होंगे।** चयनित उम्मीदवारों की योग्यता सूची लिखित परीक्षा और मौखिक परीक्षा में उम्मीदवार द्वारा प्राप्त कुल अंकों के आधार पर तैयार की जाएगी। .

(जोर दिया गया)

51. 1961 के अपरिवर्तित नियमों के तहत, उच्च न्यायालय से उम्मीद की जाती थी कि वह लिखित परीक्षा और मौखिक परीक्षा में उम्मीदवारों द्वारा प्राप्त कुल अंकों के आधार पर चयनित उम्मीदवारों की योग्यता सूची तैयार करेगा, जिसमें मौखिक परीक्षा के लिए न्यूनतम कट-ऑफ की कोई आवश्यकता नहीं होगी। इस प्रकार, चयनित उम्मीदवारों की योग्यता सूची तैयार करने के अपेक्षित पाठ्यक्रम से हटने का प्रशासनिक समिति का निर्णय 1961 के अपरिवर्तित नियमों के विपरीत है। यह भी रेखांकित करना महत्वपूर्ण है कि वाइवा वॉस के लिए न्यूनतम कट-ऑफ की आवश्यकता वाइवा वॉस के संचालन के बाद शुरू की गई थी। यह स्पष्ट है कि याचिकाकर्ताओं को इस बात की कोई सूचना नहीं थी कि मौखिक परीक्षा के लिए ऐसी आवश्यकता लागू की जाएगी। हमारी राय है कि उच्च न्यायालय का निर्णय याचिकाकर्ताओं के लिए अनुचित है और शक्ति का मनमाना प्रयोग है।

52. उच्च न्यायालय का निर्णय भी निरंतरता और पूर्वानुमेयता की कसौटी को संतुष्ट करने में विफल रहता है क्योंकि यह स्थापित प्रथा का उल्लंघन करता है। उच्च न्यायालय ने 2013 और 2014 के लिए जिला और सत्र न्यायाधीशों के पद पर चयन के लिए वाइवा वॉस के लिए न्यूनतम कट-ऑफ की आवश्यकता नहीं लगाई। यद्यपि उच्च न्यायालय के औचित्य का जब अपनी शर्तों पर विश्लेषण किया जाता है, तो यह बाध्यकारी होता है, लेकिन यह वैधता पर आधारित नहीं होता है। वाइवा वॉइस के लिए न्यूनतम कट-ऑफ लागू करने के उच्च न्यायालय के फैसले ने याचिकाकर्ताओं की ठोस वैध अपेक्षा को निराश कर दिया। चूँकि उच्च न्यायालय का निर्णय कानूनी रूप से असमर्थनीय है और निष्पक्षता, निरंतरता और पूर्वानुमेयता की कसौटी पर विफल रहता है, इसलिए हम मानते हैं कि इस तरह की कार्रवाई मनमाना और अनुच्छेद 14 का उल्लंघन है।

iii. <u>इस अदालत को क्या करना चाहिए?</u>

53. अब न्यायालय के समक्ष जो प्रश्न उठता है, वह याचिकाकर्ताओं को दी जा सकने वाली राहत के संबंध में है। सफल उम्मीदवारों की अंतिम सूची 6 मार्च 2017 को जारी की गई थी। जिन उम्मीदवारों का चयन किया गया है, वे लगभग छह वर्षों से जिला और सत्र न्यायाधीशों के रूप में काम कर रहे हैं। इस बीच, सभी याचिकाकर्ता जो न्यायालय के समक्ष हैं, उन्होंने न्यायिक कार्यालयों में कार्य नहीं किया है। इस समय के अंत में, अपने कर्तव्यों का पालन करने वाले उम्मीदवारों को अयोग्य घोषित करना मुश्किल हो सकता है। इस स्तर पर उन्हें पद से हटाना जनहित के विपरीत होगा क्योंकि उन्होंने केरल राज्य की सेवा में न्यायिक अधिकारियों के रूप में अनुभव प्राप्त किया है। जबकि याचिकाकर्ताओं की शिकायत यह है कि यदि लिखित परीक्षा और मौखिक परीक्षा में कुल अंकों को ध्यान में रखा जाता है, तो वे तीन उम्मीदवारों से अधिक रैंक प्राप्त करेंगे जो इन कार्यवाही के लिए प्रतिवादी हैं, समान रूप से, हम इस तथ्य को नहीं भूल सकते हैं कि सभी चयनित उम्मीदवार अन्यथा न्यायिक कार्यालय के लिए योग्य हैं और लंबे समय से काम कर रहे हैं। उन्हें हटाने से, कठोर होने के अलावा, ऐसी स्थिति पैदा होगी जहां उच्च न्यायपालिका उन योग्य उम्मीदवारों की सेवाएं खो देगी जिन्होंने पिछले छह वर्षों में जिला न्यायाधीश के पद पर अनुभव प्राप्त किया है।

54. उपरोक्त कारणों से, हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि वर्तमान स्तर पर याचिकाकर्ताओं को उच्च न्यायिक सेवा में शामिल करने का निर्देश देना संभव नहीं होगा। कई याचिकाकर्ता तब से बार में शामिल हो गए होंगे और सक्रिय अभ्यास में होंगे। यह स्पष्ट किए जाने की आवश्यकता है कि 30 सितंबर 2015 को शुरू की गई प्रक्रिया में उच्च न्यायिक सेवा में चयन प्राप्त करने में उनका विफल होना, उनकी योग्यता या क्षमता पर कोई प्रतिबिंब नहीं है और भविष्य में उनके किसी अन्य न्यायिक या अन्य पद के लिए विचार किए जाने के रास्ते में नहीं आएगा।

**ई. निष्कर्ष**

55. उपरोक्त चर्चाओं को ध्यान में रखते हुए हमारे निष्कर्ष निम्नलिखित हैंः

(i) अच्छे प्रशासन के सिद्धांतों के लिए आवश्यक है कि सार्वजनिक प्राधिकरणों के निर्णयों को निरंतरता, पारदर्शिता और पूर्वानुमेयता की परीक्षा का सामना करना चाहिए ताकि का मनमाना और अनुच्छेद 14 उल्लंघनकारी करार दिए जाने से बचा जा सके।

(ii) एक व्यक्ति जो मूल वैध अपेक्षा के सिद्धांत के आधार पर लाभ या हक का दावा करता है, उसे निम्नलिखित स्थापित करना होगाः(i) अपेक्षा की वैधता; और यह कि (ii) वैध अपेक्षा से इनकार करने से अनुच्छेद 14 का उल्लंघन हुआ;

(iii) एक सार्वजनिक प्राधिकरण को अदालत के समक्ष प्रासंगिक सामग्री प्रस्तुत करके निष्पक्ष रूप से प्रदर्शित करना चाहिए कि उसका निर्णय वैध अपेक्षा के दावे को विफल करने के लिए सार्वजनिक हित में था;

(iv) केरल उच्च न्यायालय का मौखिक परीक्षा में न्यूनतम कटौती लागू करने का निर्णय 1961 के नियमों के नियम 2 (सी) (iii) के विपरीत है।

(v) वाइवा वॉस के लिए न्यूनतम कट-ऑफ अंक लागू करने का उच्च न्यायालय का निर्णय याचिकाकर्ताओं की ठोस वैध अपेक्षा को निराश करता है। यह निर्णय मनमाना और अनुच्छेद 14 का उल्लंघन है।

(vi) राहत के संदर्भ में, हमारा मानना है कि छह साल से अधिक समय बीतने के बाद याचिकाकर्ताओं को उच्च न्यायिक सेवा में शामिल करने का निर्देश देना जनहित के विपरीत होगा। जिन उम्मीदवारों का चयन लगभग छह साल पहले

किया गया है, उन्हें अयोग्य नहीं ठहराया जा सकता है। वे सभी योग्य थे और राज्य की जिला न्यायपालिका की सेवा कर रहे हैं। इस स्तर पर उन्हें हटाना जनहित के विपरीत होगा। याचिकाकर्ताओं को शामिल करना, उनके बनिस्पत जो लंबी समयावधि से न्यायिक कार्यालय में पदासीन हैं, नए उम्मीदवारों को प्राथमिकता देकर लाना होगा। राज्य और उसके नागरिकों को वरिष्ठ पद पर इन अनुभवी न्यायिक अधिकारियों के लाभ से वंचित करना जनहित में नहीं होगा।

56. उपरोक्त शर्तों में हमने जो विचार लिया है, उसमें हमने उस व्यापक प्रश्न का उत्तर देना आवश्यक नहीं समझा है जिसे संविधान पीठ को भेजा गया है। इसके अलावा, यह सवाल कुछ अन्य मामलों में भी उचित रुप से उठाया गया है जो उन मामलों के वर्तमान समूह का हिस्सा हैं जिनमें संविधान पीठ द्वारा दलीलें सुनी जा रही हैं।

57. याचिकाओं का तदनुसार उपरोक्त शर्तों में निपटारा किया जाता है।

58. लंबित आवेदन, यदि कोई हों, का निपटारा कर दिया जाता है।

**द्वारा तैयार किए गए हेडनोटः** **याचिकाओं का निपटारा किया गया।**

**अंकित ज्ञान**